International Journal of Applied Research 2023; 9(2): 366-367

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2023; 9(2): 366-367
www.allresearchjournal.com
Received: 13-12-2022
Accepted: 17-01-2023

डॉ सविता प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 सविता प्रसाद
असिस्टेंट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

समकालीन कला में प्रयोगधर्मिता एवं कला बाजार

डॉ सविता प्रसाद

सारांश
रचनात्मकता मानव स्वभाव है। प्रत्येक व्यक्ति के क्रिया–कलापों में सृजनशीलता परिलक्षित होती है। बोलने, नृत्य, लेखन, संगीत, चित्रण, सृजन, समस्त क्रियाओं एवं विधाओं में कुछ न कुछ नये रूप, आकार, भाव अस्तित्व में दृष्टिगोचर होते हैं। आधुनिक समाज का आधुनिक कला को ओर अग्रसर होता प्रथम चरण है। युग परिवर्तित होता है। उसे साथ–साथ परम्परायें, शैलियाँ और भाषा सभी बदल जाते हैं। परन्तु आत्मा और हृदय का मूल स्वरूप कभी नहीं बदलता। कलाकार इसी मूलरूप की रूप योजना को विषय बनाकर चित्रित करता है, वह निश्चय ही स्थायी होता है। उसी मूलरूप से यदि युग की परम्पराये भावनायें, परिवर्तन तथा गतिविधियाँ सम्बन्धित हो तो कलाकृति का निखार द्विगुणित हो जाता है और यही कलाकार की सच्ची मौलिकता एवं रचनात्मकता है। कलाकार की कलाकृति में कुछ बिन्दु अवश्य होते हैं जो उसकी रचनात्मकता एवं आधुनिकता को पहचान देते हैं और उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं।

कूट शब्दः व्याख्यान, पाठ्यक्रम, समाज, संगठन, विकास

प्रस्तावना
प्रथम दृष्टिकोण कलाकार और सहृदय के मध्य सम्पर्क स्थापित होता है, कलाकार का सृजनात्मक गतिविधियों का उद्देश्य जहाँ सम्बन्धों तथा मनोवेगों को दूसरों तक पहुँचाना हैं वहीं कलाकार द्वारा अपने स्वयं के मनोभावों की पहचान और उसके आन्तिरिक संघर्ष अथवा सूक्ष्म अनुभूतियाँ आकारित होती है। जोकि कलाकृति में सौन्दर्यानुभूति एवं रसास्वादन एवं संदेश कला समाज को दे सके।
आधुनिक कलाकृति के मूल्यांकन का दूसरा बिन्दु है। कृति की विषय वस्तु की किलष्टता या सहजता। जो दर्शक को कलाकार एवं कलाकृति से जोड़ता है।
तीसरा बिन्दु, कलाकृति को विषय–वस्तु की नवीनता पर हो सकता है। यदि विषय–वस्तु नयी हो, तो उसे समझना कठिन होगा। इस दृष्टिकोण से आधुनिक तकनीकी तथा वैज्ञानिक प्रगति सामाजिक, व्यक्तिगत प्रभाव को समझने और आत्मसात करने के लिए पर्याप्त प्रयोगों एवं दृष्टिकोण को समझने की आवश्यकता है। जिसके आधार पर ही आधुनिक कृतियों का मूल्यांकन कर सकते हैं।
चतुर्थ बिन्दु कलाकृति के संयोजन Compositional Structure और उसके कथित (Indented) विषयवस्तु के समन्वय पर आधारित रहता है। इनके आपसी सन्तुलन से कृति में आकर्षण एवं रसानुभूति होती है। इन बिन्दुओं को आत्मसात करने के उपरान्त कलाकार की कृति दर्शक को प्रभावित करने में समर्थ होती है।श ऐसी कलाकृतियाँ कलादीर्घा में प्रदर्शित हो कला बाजार को प्रोत्साहित करती हैं। कला प्रेमियों के रुझानों के माध्यम से निज निवास स्थान, सरकारी संस्थानों, एवं अकादमी आदि को सुसज्जित कर कलाकार को आर्थिक रूप से सुदृढ करती है।
यह नितान्त आवश्यक है कि कला युग चेतना को लेकर अनुप्राणित हो और कला के रूप में आत्मा एवं हृदय मूलरूप होने चाहिये तभी सार्वभौम एवं व्यापक होगी। कलाकार की इस मौन भाषा को विश्व जब अनायास ही समझे तभी विश्व कलाकार हो सकता है। समकालीन कला का आन्दोलन या आधुनिक कला का आन्दोलन वास्तव में बम्बई में 1940 ई0 के पश्चात प्रारम्भ हुआ। सर जे०जे० स्कूल ऑफ आर्ट्स स्वाभाविक रूप से इसका केन्द्र रहा। आधुनिक कला अजन्ता के आधार पर चली परन्तु कुछ समय पश्चात इसका आधार यूरोपीय प्रभाववादी या पोस्ट प्रभाववादी रहा है। रामायण, महाभारत तथा भागवत के आधार पर नये दृष्टिकोण से चित्र बनाये जा रहे हैं। हुसैनश का 'भीम को शरशैय्या शैलचोयल का 'जरासंघ वध' एवं अर्जुन जाना का गोवर्धन धारण इस दृष्टि से उल्लेखनीय चित्र है। परम्परागत लघु चित्र शैली एवं तकनीक ने आधुनिक कलाकारों को भी प्रभावित किया जिससे प्रभावित हो आधुनिक भारतीय चित्रकला के पुनरुत्थान कालीन युग में ई०वी० हेवल तथा अवनीन्द्रनाथ टैगार मुगल शैली व राजपूत शैली से विशेष प्रभावित हुए। प्रो० आर०एस० धीर का अप्रभ्रंश शैली से प्रभावित समीक्षावादी चित्र एवं शैल चोयल का राजस्थान मिनिएचर से प्रभावित

आधुनिक चित्र कला बाजार में स्थान बनाये हुए हैं। यामिनी राय ने लोक कलाओं से प्रेरणा ले उनके ओज एवं सरलता को अपनी शैली में गुम्फित किया। लघु चित्रण के शैलीगत तत्त्वों वर्णादयता, ओजपूर्ण सपाटेदार रेखांका, चित्रतल का ज्यामितीय तथा आवश्यकतानुसार विवरणों एवं सूक्ष्म अकंन को आधुनिक अनुभूति के रूप में ग्रहण किया। इन विशेषताओं को भारतीय चित्रकला में प्राप्तश आधुनिक अनुभूति के रूप में लेने से ये परम्परा के अनुकरण से मुक्त हो गयी है। इस प्रकार की प्रवृत्ति के प्रमुख कलाकार हुसैन, हेब्बार, लक्ष्मण पै. मोहन सामन्त, शैली चोयल आदि जिनकी कला में प्रायः सपाटरंग, छाया का एव, सशक्त रेखांकन, चमकदार वर्ण योजना तथा टेम्परा माध्यम की प्रधानता है। भूपेन खक्खर के चित्रों में स्वचालित वाहनों (मोटरों, स्कूटर, साइकिल, बस) शहरी भवनों तथा बिजली के खम्भों आदि को लघु चित्रों के आधार पर आधुनिक स्वरूप प्रदान किया। जो आज कला बाजार की शोभा बढ़ा रहे हैं। पश्चिमी कलाकारों के समान भारतीय कलाकार भी विभिन्न स्त्रोतों से प्रेरणा लेकर अपनी कला शैलियों का विकास कर रहे हैं। कलाकार यन्त्र और तन्त्र पर आधारित स्वरूपों, ज्यामीतिय अमूर्तरूप, प्रतीक चिह्न, कमल, सूर्य, मीन, चन्द्र आदि, शक्ति, सर्प, चामुण्डा आदि को चित्रित कर समकालीन कला को नया आयाम दिया।

भारत के अधिकांश चित्रकार योरोपीय शास्त्रीय कला, यथार्थवाद, प्रभाववाद तथा अभिव्यंजनावाद से प्रेरित हुए। इसके पश्चात् धनवाद की प्रेरणा का दौर आया। 1960 में कलाकार अमूर्त ज्यामीतिय रूपों की ओर उन्मुख हुए और तान्त्रिक कला का प्रारम्भहुआ। इसी समय सूजा ब्रिटेन में प्रकाशित होने वाली पत्रिका स्टूडियों, में पश्चिम अमूर्त कला एवं भारतीय तान्त्रिक कला के अन्तः सूत्रों की ओर संकेत किया। जे० स्वामीनाथन, नीरद मजूमदार, वीरेन्द्र डे, के०सी० पणिक्कर, आदि के चित्रों को दर्शकों ने पसन्द किया। इनकी कृतियों को अच्छे मूल्यों पर विक्रय भी हुआ। 1946 में बड़ौदा में नारायण बालाजी जोगलेकर के प्रयत्नों से ग्राफिक कला को प्रोत्साहन मिला। जिसमें जयकृष्ण शान्तिदवे, विनोदराय पटेल, जयन्त पारिख, देवराज जैसे दिग्गज कलाकारों ने कला बाजार में अपना स्थान बनाया। आधुनिक कला में रचनासामग्री की दृष्टि से बहुत विविधता है। कलाकार ने प्लास्टिक के टुकड़ों, टेराकोटा टाइलों, धातुओं, गाढ़े रंगों आदि का प्रयोग कर कोलाज पैटिंग एवं इन्टोलेशन, म्यूरल आदि विधाओं को नवीन आयाम दिया गया। 'जैयराम पटेल लेमिनेटेड लकड़ी को स्थान–स्थान पर ब्लोटार्च से जलाकर चित्र बनाते हैं। सतीश गुजराल ने काष्ठ की लम्बी–लम्बी पट्टियों को जोड़कर चित्र बनाया जिसे कला प्रेमियों ने बहुत पसन्द किया। ये चित्र विश्वपटल पर अपना पहचान बनाये हुए हैं। साथ ही कला दीर्घा अकादमी को सुशोभित करते हुए आर्थिक रूप से कला बाजार में अपना स्थान रखे हैं।

सन्दर्भ सूची

1. कला त्रैमासिक (सौन्दर्य बोध विशेषांक), राज्य ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश।
2. आधुनिक भारतीय चित्रकला जी०के० अग्रवाल, 22,23,24
3. Souvenir & D-E-I- Dayalbagh राष्ट्रीय संगोष्ठी, 2012
4. कला वार्ता मध्य प्रदेश अकादमी।
5. बृहद आधुनिक कला कोश, कला और उसका बाजार, पू.स. 256 257,259
6. दैनिक जागरण 7 फरवरी, 2010
7. I-Next 8 मई, 2010